UGC Approved, Journal No. 48416 (IJCR), Impact Factor 6.0 ISSN : 2393-8358

Interdisciplinary Journal of Contemporary Research

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 11, No. 1 January, 2024

PEER REVIEWED JOURNAL

EDITOR

Dr. H.L. Sharma
Associate Professor
Shimla, Himachal Pradesh

Dr. Hans Prabhakar Ravidas
Assistant Professor
Department of Performing Arts,
National Sanskrit University, Tirupati

Dr. Anil Kumar
Assistant Professor, Department of History
Rajdhani College, University of Delhi

Published by
VPO Nandpur, Tehsil-Jubbal, District-Shimla, Himachal Pradesh
email : ijcrournal971@gmail.com, Website : ijcrjournals.com

▸	उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की कोचिंग के प्रति अभिरूचि का अध्ययन **डॉ0 शिवम सक्सेना, डॉ0 अमर बहादुर एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	93-96
▸	विद्यालयी बच्चों पर प्राणायाम का सकारात्मक प्रभाव **अमृता कुमारी एवं आलोक कुमार पाण्डेय**	98-102
▸	प्रशिक्षण महाविद्यालयों में शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की दंड के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन **मनेन्द्र कुमार लहकोडिया, विनोद कुमार शर्मा एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	103-106
▸	माध्यमिक स्तर के राजकीय एवं निजी विद्यालयों में अध्यनरत विद्यार्थियों में भारतीय संस्कृति के स्तर का अध्ययन **गजानंद सैन एवं डॉ0 मोहनलाल मेघवाल**	107-109
▸	माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक वंचना का अध्ययन **महेश चंद जाटव, अमन कुमार एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	110-112
▸	आधुनिक भारत में प्रचलित पश्चिमी उपनिवेशवादी 'कास्ट' की संकल्पना का अवलोकन और समीक्षा **डॉ0 ओंकार चतुर्वेदी**	113-116
▸	उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के संस्थाप्रधानों की कार्यरत जीवन की गुणवत्ता का अध्ययन **जयसिंह जाटव, ज्योति कश्यप एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	117-120
▸	करौली जिले के सरकारी व गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कक्षा शिक्षण के प्रति जवाबदेही का तुलनात्मक अध्ययन **श्री जगदीश प्रसाद शर्मा, श्री छैल बिहारी शर्मा एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	121-125
▸	माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में नए सीसीई पैटर्न के अनुसार पढ़ाई जाने वाले पाठ्यक्रम का विद्यार्थियों अध्यापकों एवं अभिभावकों के मध्य पाठ्यक्रम संतुष्टीकरण का विश्लेषणात्मक अध्ययन **श्रीमती मुकेशी मीना, श्री नितेंद्र कुमार शर्मा एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	126-128
▸	स्वामी विवेकानन्द के दार्शनिक एवं शैक्षिक चिन्तन का अध्ययन **श्री मनेन्द्र कुमार लहकोडिया, श्री जगदीश प्रसाद शर्मा एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	129-132
▸	सामान्य वर्ग व अन्य पिछड़ा वर्ग के बी0एड0 में अध्यनरत प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व एवं समायोजन का अध्ययन **विनोद कुमार शर्मा, मो0 आरिफ एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	133-136
▸	स्नातक स्तर पर विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव **मोहम्मद रफी एवं डॉ0 माहेजबी**	137-139
▸	सामान्य एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की नारी की सामाजिक स्वतंत्रता एवं नारी समानता के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन **विष्णु कुमार शर्मा, डॉ0 विवेक मिश्रा एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	140-142
▸	The state of Women's Education in India impacting their Work Participation Rates with Special Reference to the Handloom Industry of Pilkhuwa **Anamika Pandey**	143-152
▸	Exploring the Theoretical Foundations of Animal-Assisted Therapy in Alleviating Loneliness among the Geriatric Population **Devyani Awasthi**	153-157

UGC Approved Journal No. 48416 (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal)
Interdisciplinary Journal of Contemporary Research, Vol. 11, No. 1, January, 2024
Impact Factor : 6.0
ISSN : 2393-8358

सामान्य एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की नारी की सामाजिक स्वतंत्रता एवं नारी समानता के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

विष्णु कुमार शर्मा
सहायक आचार्य, वीणा मैमोरियल कॉलेज ऑफ एजुकेशन, पदेवा, करौली (राज0)
डॉ0 विवेक मिश्रा
सहायक आचार्य, वीणा मैमोरियल कॉलेज ऑफ एजुकेशन, पदेवा, करौली (राज0)
डॉ0 मनोज कुमार शर्मा
प्राचार्य, वीणा मैमोरियल कॉलेज ऑफ एजुकेशन, पदेवा, करौली (राज0)

सारांश

इतिहास के पन्नों में यदि स्त्रियों की स्थिति देखी जाए तो वैदिक काल स्त्रियों के लिए स्वर्णिम काल था। स्त्रियों के सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्र में अनेक अधिकार थे उस काल में भी गार्गी एवं मैत्री जैसी विदुषी महिलाएं ऋषि मुनियों के साथ संवाद करती थी लेकिन धीरे–धीरे पौराणिक काल में स्त्रीयों की दशा में परिवर्तन आने लगा। जिसमें विधवा विवाह, शिक्षा आदि को निषेध किया गया। सतीप्रथा एवं पर्दाप्रथा प्रारम्भ हुई एवं वहुपत्नि प्रथा को स्वीकार किया जाने लगा। तदन्तर स्त्रियों के स्तर में कमी आई विधवा विवाह एवं स्त्री शिक्षा को पूर्ण रूप से निषेध कर दिया गया।

शोध कार्य हेतु आदर्श मूलक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया शोध कार्य में जनसंख्या के रूप में सामान्य एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों को रखा गया शोध उपकरण के रूप में प्रमापी कृत उपकरण एवं एलआई भूषण द्वारा निर्मित नारी की सामाजिक स्वतंत्रता मापनी एवं डॉ रमा तिवारी द्वारा नारी सामानता मनोवृति मापदंड का प्रयोग किया गया आंकड़ों की सांख्यिकी विश्लेषण हेतु मानक विचलन एवं टी परीक्षण का उपयोग किया गया।

शोध समस्या की प्रस्तावना

इतिहास के पन्नों में यदि स्त्रियों की स्थिति देखी जाए तो वैदिक काल स्त्रियों के लिए स्वर्णिम काल था स्त्रियों को सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्र में अनेक अधिकार थे उस काल में भी गार्गी एवं मैत्री जैसी विदुषी महिलाएं ऋषि मुनियों के साथ बौद्धिक चर्चाएं करती थी। प्रत्येक अनुसंधान का कोई न कोई औचित्य आवश्य होता है। क्योंकि कारण व कार्य एक दूसरे के पूरक होते हैं अनुसंधान के परिणाम शैक्षिक जगत और उसके व्यवहार को प्रमाणित करते हैं। वर्तमान समय में महिलाओं की स्थिति का अवलोकन किया जाये तो आज भी स्थिति संतोषजनक नहीं है। महिलाओं की स्थिति सुधार के लिए भारतीय महिला परिषद भारतीय महिलो संघ, भारतीय राष्ट्रीय परिषद आदि ने स्त्रियों के अधिकारों व अवसरों की समानता आदि का मामला उठाकर सराहनीय कार्य किया गया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद संविधान निर्माताओं ने भी पुरूषों के सामान ही महिलाओं को भी स्थान दिया है। इस तरह इस विषय पर विचार किया गया कि अनुसंधान की आवश्यकता है। अतः शोधकर्ता द्वारा "सामान्य एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की नारी की सामाजिक स्वतंत्रता एवं नारी समानता के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन" पर शोध कार्य किया गया।

शोध समस्या का औचित्य

समाज के लिए महिला व पुरुष दो पहियों के समान है एक के कमजोर होने पर वाहन रूपी समाज लड़खड़ाने लगता है। कोई भी समाज महिला वर्ग की भूमिका एवं उसके महत्व को नजर अंदाज करके विकास की दौड़ में आगे नहीं आ सकता महिलाओं के साथ समानता का व्यवहार तथा विकास की भागीदारी में उनकी भूमिका को रेखांकित करने वाले राष्ट्र आज विकसित राष्ट्रों की श्रेणी में आगे खड़े हैं वह उन्हें दोयम दर्जे का नागरिक न समझ कर समान नागरिक समझते हैं उपरोक्त आधार पर यह आवश्यकता अनुभव की गई कि सामान्य एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की नारी की सामाजिक स्वतंत्रता एवं नारी समानता के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया जाए अतः यह शोध कार्य योजना तैयार की जा रही है।

शोध समस्या कथन

"सामान्य एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की नारी की समानता स्वतंत्रता एवं नारी समानता के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।"

शोध अध्ययन में प्रयुक्त परिभाषित शब्दों की व्याख्या

स्वतंत्रता

सोचने की, व्यक्त करने की, पूजा करने की स्वतंत्रता।

समानता

अवसर तथा उन्नति की समानता।

अनुसूचित जाति

समाज का कमजोर एवं उपेक्षित वर्ग।

अभिवृत्ति

एक सामाजिक प्रत्यय एवं मानसिक पहलू है। एक दृष्टिकोण जो किसी विशेष व्यवहार को इंगित करता है।

नारी समानता

संविधान में समानता का अधिकार दिया गया है। स्त्री तथा पुरूषों को एक समान अधिकार प्रदान किये गये हैं।

शोध समस्या के उद्देश्य

- सामान्य एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की नारी की सामाजिक स्वतंत्रता के प्रति अभिवृत्ति में तुलना करना।
- सामान्य एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की नारी समानता के प्रति अभिवृत्ति में तुलना करना

शोध की परिकल्पना

प्रस्तुत शोध अध्ययन की निम्न शून्य परिकल्पना निर्धारित की गई है:–

- सामान्य एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की नारी की सामाजिक स्वतंत्रता के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।
- सामान्य एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की नारी समानता के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

शोध समस्या के अध्ययन का प्रारूप

शोध कार्य हेतु आदर्श मूलक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। शोध कार्य में जनसंख्या के रूप में सामान्य एवं अनुसूचित जाति की विद्यार्थियों को लिया गया। जनसंख्या में से यादृच्छिक न्यादर्शन विधि द्वारा द्वारा न्यादर्श के रूप में 100 सामान्य एवं 100 अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों को लिया गया न्यादर्श को पूर्ण प्रतिनिधित्व बनाने के लिए शाहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के हिंदी माध्यम के बालक बालिकाओं को रखा गया। शोध उपकरण के रूप में प्रमापीकृत एल.आई. भूषण द्वारा निर्मित नारी के सामाजिक स्वतंत्रता मापनी एवं डॉ0 रमा तिवारी द्वारा नारी समानता मनोवृत्ति मापदंड मापनी का प्रयोग किया गया आंकड़ों के सांख्यिकी विश्लेषण हेतु मानक विचलन एवं टी परीक्षण का उपयोग किया गया।

शोध अध्ययन का सांख्यिकीय विश्लेषण

सामान्य एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की नारी की सामाजिक स्वतंत्रता के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान एवं प्रमाप विचलन तथा टी मूल्य निकाला गया।

तालिका क्रमांक 1 : सामान्य एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की नारी की सामाजिक स्वतंत्रता के प्रति अभिवृत्ति से संबंधित आंकड़े प्रदर्शित करने वाली तालिका

सामान्य जाति विद्यार्थी		अनुसूचित जाति विद्यार्थी		t-value
Mean	S.D.	Mean	S.D.	1.45
10.54	4.06	9.36	4.18	असार्थक

उपयुक्त तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि सामान्य जाति के विद्यार्थियों में अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की तुलना में नारी की सामाजिक स्वतंत्रता के प्रति अधिक सकारात्मक अभिवृत्ति पाई गई दोनों समूह के मध्यमानो में सार्थक अंतर नहीं पाया जो टी परीक्षण मान 1.45 सार्थकता के 0.01 तथा 0.05 स्तरों के मान से कम पाया गया अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत पाई गई।

तालिका क्रमांक 2 : सामान्य एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की नारी समानता के प्रति अभिवृत्ति से संबंधित आंकड़े प्रदर्शित करने वाली तालिका

सामान्य जाति विद्यार्थी (N1=50)		अनुसूचित जाति विद्याथी (N2=50)		t-value
Mean	S.D.	Mean	S.D.	3.64
63.94	6.788	59.2	6.248	सार्थक

उपर्युक्त तालिका के सांख्यिकी विश्लेषण से स्पष्ट है कि सामान्य जाति तथा अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों में नारी समानता के प्रति लगभग समान स्तर की अभिवृत्ति पाई गई। दोनों मध्यमानो में सार्थक अंतर पाया गया जो टी मान 3.64 द्वारा प्रदर्शित है जो सार्थकता के 0.01 तथा 0.05 स्तरों के मानो से अधिक पाया गया अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत हो जाती है।

शोध अध्ययन के निष्कर्ष

- सामान्य एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की नारी की सामाजिक स्वतंत्रता के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
- प्राप्त प्रदत्तों के आधार पर सामान्य एवं अनुसूचित जातिं के विद्यार्थियों की नारी की सामाजिक स्वतंत्रता के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया (0.05 के विश्वास स्तर पर) सामान्य एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की नारी समानता के प्रति अभिवृत्ति सामान्य होगी।
- प्राप्त प्रदत्तों के आधार पर सामान्य एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की नारी समानता के प्रति अभिवृत्ति में 0.05 के स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया।

शोध कार्य द्वारा विद्यार्थियों हेतु सुझाव

- विद्यार्थियों में प्रस्तुत शोध से लड़के लड़कियों के प्रति समान व्यवहार की अभिवृत्ति का विकास होगा।
- परिवार में रहकर विद्यार्थी समान व्यवहार का प्रदर्शन प्रस्तुत शोध की सहायता से सीख सकते हैं।
- प्रस्तुत शोध की सहायता से छात्र–छात्राओं में नैतिक गुणों का विकास किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. ए0एम0 अंसारी : महिला और मानवाधिकार, ज्योति प्रकाशन, 2000
2. उमेश चंद्र अग्रवाल : भारत में महिला समानता और सशक्तिकरण के आधार
3. डॉ0 ओ0पी0 शर्मा : महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका, 2004
4. जबरनाथ पुरोहित : स्वतंत्र भारत में शिक्षा का विकास समस्याएं एवं नवाचार